

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, क्राइस्टोलॉजी, सत्र 18, सिस्टमैटिक्स, क्राइस्ट की मानवता, प्रमाण

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन हैं जो क्राइस्टोलॉजी पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 18 है, सिस्टमैटिक्स, क्राइस्ट प्रूफ की मानवता।

हम क्राइस्टोलॉजी, विशेष रूप से यीशु की मानवता के बारे में अपना अध्ययन जारी रखते हैं, और हम इब्रानियों की पुस्तक में हैं, इस बार हमारे प्रभु की मानवता के एक और प्रदर्शन के साथ, उनके पूर्ण होने के बारे में।

तीन बार, इब्रानियों ने, विशिष्ट रूप से, पूरे शास्त्र में केवल इब्रानियों ने, इस भाषा का उपयोग किया, हमें बताया कि देहधारी परमेश्वर के पुत्र को पूर्ण बनाया गया या वह पूर्ण बन गया। सबसे पहले, यह इब्रानियों 2.10 में है, क्योंकि भजन 8 को उद्धृत करने और अंतिम बात कहने के बाद यह उचित था, भजन 8 सृष्टि का भजन है, और वह सम्मान और महिमा जिसके साथ हमारे पहले माता-पिता को ताज पहनाया गया था, और वह प्रभुत्व जो उन्होंने प्रयोग किया था। वे चीजें पतन में कम हो गईं, इसलिए अब हम सब कुछ उसके अधीन नहीं देखते हैं, अर्थात् मानवता, श्लोक 8। लेकिन हम उसे देखते हैं, जो थोड़ी देर के लिए स्वर्गदूतों से कम बनाया गया था, अर्थात् यीशु, मृत्यु की पीड़ा के कारण महिमा और सम्मान के साथ ताज पहनाया गया, ताकि परमेश्वर की कृपा से वह सभी के लिए मृत्यु का स्वाद चख सके।

क्योंकि यह उचित था कि वह, जिसके लिए और जिसके द्वारा सभी चीजें मौजूद हैं, बहुत से पुत्रों को महिमा में लाने के लिए, उनके उद्धार के संस्थापक को पीड़ा के माध्यम से सिद्ध करे। पिता के लिए यह उचित था, अर्थ है, उनके उद्धार के संस्थापक को पीड़ा के माध्यम से सिद्ध बनाना। इससे, हम सीखते हैं कि पिता किसी अर्थ में पुत्र को सिद्ध बनाता है और यह सिद्ध होना पुत्र के दुख से संबंधित है।

मैं 5, 8 और 9 को छोड़ रहा हूँ क्योंकि वे वह स्थान हैं जहाँ हम रहस्य को कुछ हद तक सुलझाने की कोशिश करते हैं, जितना हम कर सकते हैं, और 7:28 पर जाते हैं। 26, क्योंकि यह वास्तव में उचित था कि हमारे पास ऐसा महायाजक हो, पवित्र, निर्दोष, निष्कलंक, पापियों से अलग, और स्वर्ग से ऊपर ऊंचा। उसे उन महायाजकों की तरह, प्रतिदिन बलिदान चढ़ाने की कोई ज़रूरत नहीं है, पहले अपने पापों के लिए, और फिर लोगों के पापों के लिए, क्योंकि उसने यह सब एक बार के लिए किया जब उसने खुद को बलिदान किया।

क्योंकि व्यवस्था पुरुषों को उनकी निर्बलता के अनुसार महायाजक नियुक्त करती है, परन्तु शपथ का वचन, भजन संहिता 110, पद 4, तू युगानुयुग याजक है, पिता ने दाऊद के प्रभु से कहा, तू मलिकिसिदक की रीति पर युगानुयुग याजक है। परन्तु शपथ का वचन, जो व्यवस्था के बाद आया, एक पुत्र को नियुक्त करता है जो सर्वदा सिद्ध हो चुका है। एक बार फिर, परमेश्वर, भजन

संहिता 110, पद 4 में शपथ के वचन के द्वारा मलिकिसिदक की रीति पर एक पुत्र को महायाजक नियुक्त करता है, और यह पुत्र सर्वदा सिद्ध हो चुका है।

इसका क्या मतलब है? यह थोड़ा परेशान करने वाला है। भगवान को कैसे परिपूर्ण बनाया जा सकता है? पीटरसन, आपने निश्चित रूप से हमें सिखाया कि इस तरह की भाषा, परिपूर्ण बनाया जाना, यीशु के ईश्वरत्व से संबंधित नहीं है, और यहाँ नोट्स में, यह मसीह की मानवता के अंतर्गत है, इसलिए निश्चित रूप से यह उनकी मानवता से संबंधित है, लेकिन फिर भी, उनकी मानवता को कैसे परिपूर्ण बनाया जा सकता है? उन्होंने कभी पाप नहीं किया। यदि वह पाप रहित हैं, तो उन्हें कैसे परिपूर्ण बनाया जा सकता है? अध्याय 5, श्लोक 8 और 9, हमारी मदद करते हैं।

अध्याय 5 की आयत 5, वैसे ही मसीह ने भी अपने आप को महायाजक बनने के लिये बड़ा नहीं किया, परन्तु उसी के द्वारा नियुक्त हुआ जिसने उससे कहा, तू मेरा पुत्र है, भजन 2 का हवाला देते हुए, आज मैं ने तुझे उत्पन्न किया है, जैसा कि वह दूसरी जगह भी कहता है, भजन 110, आयत 4, तू मलिकिसिदक की रीति पर युगानुयुग याजक है। अपनी देह में रहने के दिनों में यीशु ने ऊंचे शब्द से पुकारकर और आंसू बहा-बहाकर उससे जो उसे मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएं और बिनती की, और उसके भय के कारण उसकी सुनी गई। यद्यपि वह पुत्र था, मेरी समझ से यह एक ईश्वरीय उपाधि है; उसने दुख उठाकर आज्ञाकारिता सीखी, और सिद्ध बनकर, वह उन सब के लिये अनन्त उद्धार का स्रोत बन गया जो उसकी आज्ञा मानते हैं, और मलिकिसिदक की रीति पर परमेश्वर द्वारा महायाजक नियुक्त किया गया।

यहाँ हमारे पास और जानकारी है। यीशु का सिद्ध होना उसके द्वारा पीड़ा के माध्यम से आज्ञाकारिता सीखने से संबंधित है; याद रखें, 210 ने कहा कि सिद्ध होना और पीड़ा सहना एक साथ है। यहाँ हमारे पास एक और तत्व है: वह पीड़ा सहता है, वह आज्ञाकारिता सीखता है, वह सिद्ध होता है; और यह गेथसेमेन के इस संदर्भ में भी है जिसमें वह ज़ोर से चिल्लाते हुए और आंसू बहाते हुए प्रार्थनाएँ और बिनती करता है, परमेश्वर से उसे मृत्यु से बचाने के लिए कहता है, और उसकी श्रद्धा के कारण उसे उत्तर मिला।

आपका क्या मतलब है? उसे क्रूस से नहीं बचाया गया; उसे क्रूस से बचाकर उत्तर नहीं दिया गया; उसे मृतकों में से जी उठने के द्वारा उत्तर दिया गया; इस तरह वह मृत्यु से बच गया। हालाँकि वह एक पुत्र था, पद 8, उसने जो कुछ सहा उसके द्वारा आज्ञाकारिता सीखी; यह परमेश्वर की इच्छा थी कि उसका पुत्र आज्ञाकारिता सीखे, वास्तविक मानव जीवन का अनुभव करे, और दिन-प्रतिदिन पिता की आज्ञा का पालन करे। उसने अपनी आज्ञाकारिता सीखी, जिसमें दुख सहना भी शामिल है।

हालाँकि वह परमेश्वर का शाश्वत पुत्र था और परमेश्वर का परमेश्वर था, उसने अपने द्वारा झेली गई पीड़ाओं के माध्यम से आज्ञाकारिता सीखी और सिद्ध बना। परमेश्वर ने अपने बेटे को मरने के लिए 33 साल की उम्र में नहीं भेजा; उसने अपने बेटे को वर्जिन मैरी के गर्भ में गर्भ धारण करने और एक शिशु के रूप में जन्म लेने के लिए भेजा। मेरी समझ यह है कि यीशु को सिद्ध बनाया गया था, जो उसकी मानवता को दर्शाता है; निश्चित रूप से उसके देवता को सिद्ध बनाने की

आवश्यकता नहीं थी, और न ही उसकी मानवता को इस अर्थ में कि वह कभी पापी थी; यह नहीं थी; यह हमेशा पाप रहित थी।

गर्भाधान के क्षण से ही वह पवित्र था, और जो मरियम से पैदा हुआ वह पवित्र था क्योंकि आत्माएँ उस पर छाई हुई थीं और उस पर आ रही थीं और इसी तरह की अन्य बातें। किस अर्थ में उसे परिपूर्ण बनाया गया? वह पीड़ा और पिता की आज्ञा का पालन करने के माध्यम से अनुभव में परिपूर्ण बना। मैं थोड़ी कल्पना और उम्मीद है कि थोड़े हास्य के साथ उदाहरण देना पसंद करता हूँ, जैसा कि मेरे छात्र कहेंगे। शायद, और बेटों, इसमें बहुत कम हास्य है, लेकिन मैं इसका प्रयास करूँगा।

यदि पहली शताब्दी में जेरूसलम गजट होता, तो ठीक है, और उसमें नौकरी के लिए विज्ञापन होता, और नौकरी दुनिया के उद्धारकर्ता, मानव जाति के उद्धारक, ईश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ की होती। नौकरी के विवरण में तीन भाग होते। नंबर एक, सभी उम्मीदवारों को ईश्वर होना चाहिए, और किसी अन्य को आवेदन करने की आवश्यकता नहीं है। नौकरी का पूल तीन तक सिमट जाता है: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा।

नंबर दो, न केवल उद्धारक, उद्धारकर्ता और मध्यस्थ बनने के लिए उम्मीदवार को ईश्वर होना चाहिए, बल्कि उसे मनुष्य भी बनना चाहिए। अब केवल एक ही उम्मीदवार है, महिमा का प्रभु, जो मनुष्य का पुत्र बन गया।

लेकिन यहाँ उन अंशों का मुद्दा है जो सिखाते हैं कि यीशु मेरी समझ में पूर्ण हो गए थे, और वह यह है कि ईश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ, मानव जाति के उद्धारक, दुनिया के उद्धारक के लिए एक तीसरी योग्यता है, और वह है नौकरी पर प्रशिक्षण। ईश्वर 33 साल की उम्र में आकर नहीं बसे। उन्होंने अपने बेटे को जन्म दिया, मरियम के गर्भ में अपने मानवीय स्वभाव के अनुसार गर्भधारण किया, एक शिशु के रूप में जन्म लिया, बड़ा हुआ, 30 साल की उम्र में अपना सार्वजनिक मंत्रालय शुरू किया और शायद साढ़े 33 साल की उम्र में, मुझे यहाँ सटीक कालक्रम नहीं पता, वह हमारे पापों के लिए क्रूस पर मर जाता है और तीन दिन बाद जी उठता है।

यीशु ने दुखों के माध्यम से आज्ञाकारिता सीखी; अर्थात्, यह परमेश्वर की इच्छा थी, न केवल उसके लिए दिव्य होना, न केवल उसके लिए मानव होना, बल्कि मानव जीवन को उसके सभी दुखों के साथ, आज्ञाकारी रूप से, सकारात्मक रूप से, जहाँ आदम असफल हुआ, वहाँ सफल होना, ताकि वह हमें बचाने के लिए पूरी तरह से योग्य हो सके। फिर से, हम परमेश्वर के पुत्र के हमारे प्रति प्रेम पर आश्चर्यचकित होते हैं। अपने सांसारिक मंत्रालय में, वह तुरंत चिल्लाता है, मुझे आपके साथ कब तक रहना चाहिए? जब मैंने पादरियों को प्रशिक्षित किया, तो मैंने कहा कि उनके लिए कुछ समय के लिए दुनिया में काम करना अच्छा था क्योंकि वे उन लोगों की सेवा करने जा रहे थे जो हर दिन दुनिया में काम करते थे।

और अगर पादरी ईसाई स्कूल में गया, घर पर ही पढ़ाई की, और फिर ईसाई कॉलेज में गया, और फिर ईसाई सेमिनरी में गया, और फिर पादरी बन गया, तो उसे पता नहीं है कि लोग क्या-क्या झेलते हैं। और दुनिया में जीना मुश्किल है। अगर यह हमारे लिए मुश्किल है, तो क्या आप

कल्पना कर सकते हैं कि परमेश्वर के पुत्र के लिए यह कैसा रहा होगा, यहाँ तक कि उसके शिष्यों के लिए भी? आह, मैं क्रूस पर जा रहा हूँ।

और पतरस कहता है, नहीं, तुम नहीं हो। मेरा वचन, शैतान, पतरस, यीशु कहते हैं, हे मेरे भगवान। या मनुष्य का पुत्र यरूशलेम जाएगा, मुख्य याजकों और पुरनियों के हाथों धोखा दिया जाएगा, और क्रूस पर चढ़ाया जाएगा, और तीसरे दिन फिर से जी उठेगा।

और शिष्य किस बारे में बात कर रहे हैं? उनमें से कौन सबसे बड़ा है? ओह सच में? याकूब और यूहन्ना इस बात पर बहस करते हैं कि कौन सबसे बड़ा है। बाकी दस भी इससे बेहतर नहीं हैं, और वे उन पर क्रोधित हैं। क्या हम राज्य में आपके दाहिने हाथ पर बैठ सकते हैं? मेरा वचन, मुझे आपके साथ कब तक रहना चाहिए? यीशु ने हमसे प्यार किया और हमारे लिए खुद को दे दिया।

लेकिन ऐसा करने से पहले, उसकी योग्यता का एक हिस्सा, उसके दिव्य कार्य की आवश्यकता का एक हिस्सा, हमारे उद्धारक बनने के योग्य होने के लिए अनुभवात्मक रूप से परिपूर्ण होना था। ईश्वर होना पर्याप्त नहीं था, ईश्वर-मनुष्य होना पर्याप्त नहीं था। उसे सफलतापूर्वक मानव जीवन जीना था, जबकि पहला आदम असफल रहा।

वाह। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह पाप रहित था। हम अब उसकी सच्ची मानवता साबित नहीं कर रहे हैं, बल्कि हम उसकी पवित्रता की पुष्टि कर रहे हैं।

यूहन्ना 8:46 में, वह अपने शत्रुओं को मुँह पर देखकर कहता है, तुम में से कौन मुझे पाप का दोषी ठहरा सकता है? फिर से, मैं आपको सलाह नहीं देता और मैं ऐसा करता हूँ। वहाँ कुछ लोग होंगे, उनमें से कोई भी उसे पाप का दोषी नहीं ठहरा सकता। यह आश्चर्यजनक है।

2 कुरिन्थियों 5:21, जो महान औचित्य ग्रंथों में से एक है, जो सिखाता है, मसीह की धार्मिकता को पापी के आध्यात्मिक बैंक खाते में आरोपित करने का संकेत देता है। परमेश्वर ने उसे जो पाप से अनभिज्ञ था, हमारे लिए पाप बना दिया, ताकि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ। यह लूथर की कविता है, जिसमें उसने महान आदान-प्रदान सिखाया।

परमेश्वर ने उसे जो पाप से अनभिज्ञ था, हमारे लिए पाप बना दिया। हमारे पाप मसीह को सौंपे गए हैं, ताकि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन सकें। उसकी परिपूर्ण धार्मिकता हमारे आध्यात्मिक बैंक खातों में जोड़ दी गई है।

परमेश्वर ने उसे बनाया जो पाप से अनभिज्ञ था। परमेश्वर के पुत्र को ऐसे प्रलोभनों का सामना करना पड़ा जिनके बारे में हम कभी नहीं जान पाएँगे, लेकिन उसने कभी हार नहीं मानी। उसने कभी अनुभवात्मक रूप से पाप को नहीं जाना।

इब्रानियों 4:15, वह हर तरह से परीक्षा में आया, जैसे हम हैं, फिर भी पाप रहित, वह पाप रहित था। उसने न केवल अपने आप में एक पाप रहित मानव स्वभाव अपनाया, बल्कि उसने इसे बनाए

रखा। क्या मैं उसके जीवन में आत्मा के काम को नकार रहा हूँ? बेशक नहीं, लेकिन यह इस व्यक्ति के जीवन में आत्मा थी, ईश्वर-मनुष्य, यदि आप चाहें तो मानव-मानव व्यक्ति।

1 पतरस भी यशायाह 53 को उद्धृत करते हुए यही बात सिखाता है। 1 पतरस 2:21 से 25. पतरस कहता है, तुम इसी लिये बुलाए गए हो।

1 पतरस 2:21, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए दुख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके पदचिह्नों पर चलो। यीशु हमारा आदर्श है। क्या वह सबसे पहले हमारा आदर्श है? नहीं, वह सबसे पहले हमारा प्रभु और उद्धारकर्ता है, लेकिन प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में वह हमारा आदर्श है।

उसने कोई पाप नहीं किया, न उसके मुँह से कोई छल की बात निकली। जब लोग उसे बुरा-भला कहते थे, तो वह बदले में बुरा-भला नहीं कहता था। जब वह दुःख उठाता था, तो वह धमकी नहीं देता था, बल्कि अपने आप को उसके हाथ में सौंपता था, जो सच्चा न्याय करता है।

उसने स्वयं हमारे पापों को अपने शरीर में लेकर क्रूस पर चढ़ा, ताकि हम पाप के लिए मर जाएँ और धार्मिकता के लिए जीएँ। उसके घावों से तुम चंगे हो गए हो, क्योंकि तुम भेड़ों की तरह भटक रहे थे, लेकिन अब तुम अपने प्राणों के चरवाहे और निरीक्षक के पास लौट आए हो। उसने कोई पाप नहीं किया, और जैसा कि यशायाह ने कहा, न ही उसके मुँह से कोई छल की बात निकली।

यशायाह आगे कहता है कि वह उसे अपना धर्मी सेवक कहता है। 1 यूहन्ना हमारे प्रभु की पापहीनता को कई स्थानों पर प्रकाशित करता है। 1 यूहन्ना 3, दो स्थानों पर।

पहले से ही, अध्याय 2 में, हमारे पास पिता के पास एक अधिवक्ता है, यीशु मसीह, जो धर्मी है। 1 यूहन्ना 3:5। हर कोई जो पाप करने का अभ्यास करता है, आयत 4, अधर्म का भी अभ्यास करता है। पाप अधर्म है।

तुम जानते हो कि वह पापों को दूर करने के लिये प्रकट हुआ है, और उसमें पाप नहीं है। जो कोई उसमें बना रहता है वह पाप नहीं करता। जो कोई पाप करता रहता है, उसने न तो उसे देखा है, न जाना है।

हे बालकों, किसी के बहकावे में न आना। जो धर्म के काम करता है, वह धर्मी है, क्योंकि वह आप ही धर्मी है। वह पाप से अनभिज्ञ था, और धर्मी था।

परमेश्वर का पुत्र एक पापरहित उद्धारकर्ता है, और यही वह है जिसकी हम पापियों को आवश्यकता है। मैं यीशु की मानवता के प्रदर्शन को कल मैंने जो उल्लेख किया था, उसके बारे में थोड़ा और बताकर समाप्त करना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि तीन जगहें हैं, मैंने कभी किसी और को इस तरह से कहते नहीं देखा, इसलिए मैं हमेशा कहता हूँ कि अगर मैं कभी मौलिक हूँ, तो आपको सावधान रहना चाहिए, सावधान रहना चाहिए।

वैसे, शायद इनसे ज़्यादा जगहें हों, लेकिन मुझे तीन जगहें ऐसी मिलीं जहाँ यीशु की मानवता इतनी स्पष्ट है, मेरा वचन कच्चा है, और इसने चर्च के पंखों को झकझोर दिया है। उसका प्रलोभन, आत्मा उसे जंगल में ले गई ताकि शैतान द्वारा परीक्षा ली जा सके। निश्चित रूप से, वह असुरक्षित है; वह कमज़ोर है।

वास्तव में, स्वर्गदूत इसमें शामिल होते हैं। अरे, प्रलोभनों से निपटने में उसकी मदद करने के लिए नहीं, बल्कि आत्मा उसे बाहर निकालती है। 40 दिन और 40 रातों तक उपवास करने के बाद, वह भूखा था।

मज़ाक नहीं। उसने पानी पिया, और उसे जीने के लिए पीना ही था, लेकिन वाह। शैतान, दूर हो जा, अंतिम प्रलोभन के लिए, श्लोक 10।

क्योंकि यह लिखा है, यही वे शब्द हैं जिनका उपयोग उन्होंने पुराने नियम को शुरू करने के लिए किया था: तुम प्रभु अपने परमेश्वर की आराधना करोगे, और केवल उसी की सेवा करोगे। मत्ती 4:11, प्रलोभन की कहानी के अंत में, तब शैतान उसके पास से चला गया, और देखो, स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा करने लगे। यह आवश्यक था।

ईश्वर-मनुष्य होने के नाते, वह कमज़ोर था। यीशु को वास्तव में शैतान ने परीक्षा में डाला था। क्या उसने पाप किया? नहीं, उसने पाप नहीं किया, लेकिन उसे परीक्षा में डाला गया।

इब्रानियों 4:15, उसने हर तरह के प्रलोभन का अनुभव किया जो हम करते हैं। मैंने अद्भुत विश्वासियों के बारे में सुना है, और अब वे मसीह के जीवन के बारे में फिल्मों में इसके चित्रण पर प्रतिक्रिया कर रहे हैं। और मैं उन फिल्मों में सब कुछ उचित नहीं ठहराता, लेकिन मैं उसे शैतान के सामने गिड़गिड़ाते हुए नहीं देख सकता। खैर, मुझे लगता है कि मैं भी ऐसा देखना पसंद नहीं करूंगा, है ना? और मुझे नहीं पता कि इसे कैसे चित्रित किया जाना चाहिए, लेकिन मैं आपको एक बात बताऊंगा : उसे प्रलोभन दिया गया था।

शैतान के दृष्टिकोण से बुराई के लिए एक वास्तविक आग्रह था, और वह भूखा था। मेरी समझ से उसके पास पत्थरों को रोटी में बदलने की शक्ति थी, इसलिए शैतान वास्तव में चाहता है, यदि आप ईश्वर के पुत्र हैं, तो ऐसा करें। प्रलोभन उसके लिए था कि वह अपनी शक्ति, ईश्वरीय शक्ति का उपयोग पिता की इच्छा के बाहर करे, और यह एक वास्तविक प्रलोभन था। वह भूखा था, लेकिन उसने प्रलोभन को अस्वीकार कर दिया।

उसने शैतान को मना कर दिया, और हम उसके पूर्ण होने, उसकी आजीवन शुद्धता के उपकारक हैं। क्या हमें पीछे हटना चाहिए? क्या हमें उसके इस तरह से पीड़ित होने से शर्मिंदा होना चाहिए? नहीं, हमें उससे प्यार करना चाहिए क्योंकि जिसने हमसे प्यार किया और हमारे लिए खुद को दे दिया, उसने हर तरह से दुख उठाया जैसे हम पीड़ित हैं, फिर भी विजयी होकर। वह हमारी जाति का एक है।

वह ईश्वर-मनुष्य है, और इस तरह, वह हमारे स्थान पर मर गया। मैथ्यू 24:36 विशेष रूप से समस्याग्रस्त है। कोई भी उस समय का दिन नहीं जानता।

मैं हंसना चाहता हूँ, और फिर जब मैं सुनता हूँ कि अच्छे लोग, ज़्यादातर, यीशु के दूसरे आगमन की तिथियाँ तय कर रहे हैं, तो मैं बीमार हो जाता हूँ। यह मेरी आध्यात्मिक इच्छा को बहुत ज़्यादा उत्तेजित करता है। इससे भी ज़्यादा, यह चर्च को चोट पहुँचाता है।

यह प्रभु की गवाही को चोट पहुँचाता है। हे भगवान, क्योंकि, बेशक, इस तरह की बातें प्रेस में आती हैं, और वे यीशु का हवाला देते हैं कि कोई भी घंटे का दिन नहीं जानता, और लोगों ने ईमानदारी से कहा है कि आप महीने और साल जान सकते हैं। हे भगवान, क्या उसे वास्तव में यह कहना था कि कोई भी सेकंड, मिनट, घंटा, दिन, सप्ताह, महीना, वर्ष, दशक नहीं जानता? चलो, यह बेतुका है।

परमेश्वर के वचन का इस तरह का अध्ययन शर्मनाक है, और उससे भी ज़्यादा, हे भगवान, कभी-कभी ईसाई अपना सब कुछ बेचकर देखने चले जाते हैं, और एक प्रभु के आने का इंतज़ार करते हैं, और जब वह नहीं आता, तो उनमें से कुछ आत्महत्या कर लेते हैं क्योंकि वे सम्मान और शर्म की संस्कृतियों में रहते थे, और वे वापस जाकर अपने पड़ोसियों का सामना नहीं कर सकते थे जिन्हें उन्होंने अपनी सारी संपत्ति दे दी थी। ओह, यह बीमार है। यीशु के शब्दों को सुनिए, मत्ती 24:36, उस दिन और उस घड़ी के बारे में जिसे कोई नहीं जानता।

कोई नहीं जानता, और तुम मुझे यह भी नहीं बता सकते कि हम साल का महीना जान सकते हैं। हे भगवान, स्वर्ग के स्वर्गदूत भी नहीं जानते। वे सर्वज्ञ नहीं हैं।

वे सब कुछ नहीं जानते। भगवान नहीं जानते, जाहिर है कि उन्होंने न तो उन्हें सब कुछ बताया है, न ही बेटे को, लेकिन पिता को केवल दूसरे आगमन का समय पता है। क्या? एक मिनट रुकिए।

पंथ यहीं चलते हैं और कहते हैं, देखो, देखो, क्या भगवान सब कुछ नहीं जानते? हाँ। क्या यीशु सब कुछ जानते हैं? नहीं। इसलिए, वह भगवान नहीं हैं।

खैर, शुरू से ही चर्च ने इस पर झूठ बोला। वे इसे संभाल नहीं पाए, और आप फादर को ऐसी बातें कहते हुए पाएंगे, ठीक है, ठीक है, वह वास्तव में जानता था, लेकिन शिष्यों की खातिर, उसने ऐसा कहा। यह सही नहीं है।

नहीं। खैर, अगर वह भगवान है तो हम इसे कैसे संभाल सकते हैं? वह इस अर्थ में भगवान है कि उसके अवतार में शक्तियों में कोई कमी नहीं है। भगवान-मनुष्य के रूप में, उसके पास सभी दिव्य गुण और विशेषताएं हैं।

वह उनकी संपत्ति नहीं छोड़ता। वह उनका प्रयोग छोड़ देता है। अर्थात्, वह केवल पिता की इच्छा के अनुसार अपनी दिव्य शक्तियों का उपयोग करता है।

और हम नहीं जानते कि किन कारणों से, पृथ्वी पर रहते हुए, प्रभु यीशु मसीह ने अपने अपमान की स्थिति में, यह नहीं जाना; यह पिता की इच्छा नहीं थी कि प्रभु यीशु मसीह अपने दूसरे

आगमन के समय को जानें। क्या वह अब इसे जानता है? बेशक, वह अब इसे जानता है। क्या बाइबल कभी ऐसा कहती है? नहीं।

इसलिए बाइबल ऐसा नहीं कहती, लेकिन अपमान की स्थिति और महिमा की स्थिति के बीच अंतर पर आधारित एक धार्मिक कदम के रूप में, हाँ, वह अब इसे जानता है। एक बार फिर, अज्ञानता के इस कथन में उसकी मानवता कच्ची है। हमें उससे प्यार करना चाहिए जिसने हमें इतना प्यार किया कि वह इस तरह से पिता के अधीन हो गया।

आप देखिए, मसीह में, परमेश्वर हमें छूता है। जैसा कि कैल्विन ने कहा, मसीह की मानवता एक बंधन, एक भाईचारा बनाती है, उसने उस शब्द का इस्तेमाल किया, परमेश्वर और हमारे बीच एक संवाद। यहाँ पॉल ने इसे इस तरह कहा: मनुष्य मसीह यीशु परमेश्वर और मनुष्य के बीच एकमात्र मध्यस्थ है।

उसका ईश्वर होना उसे पिता से जोड़ता है। उसका मनुष्य बनना, अपने आप में एक वास्तविक मानवीय स्वभाव को ग्रहण करना, ईश्वर-मनुष्य मसीह यीशु बनना, उसे हमसे जोड़ता है। यीशु की मानवता के लिए ईश्वर का धन्यवाद।

उन्हें ले आओ, और वह तीसरा स्थान है जिसे हमने पहले ही देखा है। कृपया मेरे साथ रहो और प्रार्थना करो क्योंकि मैं दुखी हूँ। मेरी आत्मा मृत्यु के कगार पर पहुँच चुकी है।

लूका ने लिखा है कि उसके पसीने में खून की बूँदें आ रही थीं। मत्ती 26:36 से 46. हे पिता, यदि तेरी इच्छा हो, तो यह प्याला मेरे पास से टल जाए।

यह कौन सा प्याला है? मत्ती 25, यह परमेश्वर के क्रोध का प्याला है। गतसमनी में, यीशु ने खुद को, प्रतीकात्मक रूप से, परमेश्वर के क्रोध का प्याला लेते हुए और उसे पीते हुए देखा। अर्थात्, वह खुद को अपने लोगों की ओर से, उन सभी की ओर से परमेश्वर के क्रोध का अनुभव करते हुए देखता है जो उस पर विश्वास करेंगे।

और वह इससे दूर भागता है, पापी रूप से, पापी रूप से नहीं। यह हमारे छुटकारे की कीमत को दर्शाता है। हम यह समझ नहीं पाते कि जिसने बार-बार कहा, यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिसे मैं प्यार करता हूँ, कि क्रूस पर तीन घंटे तक पिता ने खुद को दूर कर लिया, जैसा कि ईसाई गीत कहता है।

वह अपना मुख फेर लेता है। बेटा उस दण्ड को सहता है जिसके हम पात्र हैं। गलातियों 3:13, मसीह ने हमें छुड़ाया, हमारे लिए अभिशाप बनकर हमें व्यवस्था के अभिशाप से छुड़ाया।

इसका मतलब यह नहीं है, जैसा कि मैंने कभी-कभी लोगों को बहुत उत्साह और कम समझ के साथ कहते सुना है, कि वह कोई और अस्तित्व बन गया, एक अभिशाप। नहीं, इसका मतलब है कि वह एक अभिशाप्त व्यक्ति के रूप में मर गया। ओह, लेकिन कोई अलग आदमी कभी नहीं होता।

ईश्वर-मनुष्य एक शापित व्यक्ति के रूप में मरा, जो व्यवस्था के अभिशाप को झेलता है, ईश्वर की सजा की धमकी, अर्थात्, जैसा कि व्यवस्थाविवरण में घोषित किया गया है, सभी व्यवस्था तोड़ने वालों पर। वह व्यवस्था तोड़ने वाला नहीं था, लेकिन वह व्यवस्था तोड़ने वालों के स्थान पर मरा और उस न्याय को स्वीकार किया। रोमियों 3:25-26, ईश्वर ने उसे अपने लहू में प्रायश्चित के रूप में सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत किया, जो यीशु में विश्वास करने वालों के लिए उसका धर्मो ठहराने वाला है।

यीशु ने हमारे पापों के लिए वह दण्ड लिया जिसके हम हकदार हैं। यह प्रायश्चित का सिद्धांत है, जो आज कई इंजीलवादियों के बीच भी लोकप्रिय नहीं है। लेकिन इसे रोमियों 3:25-26, इब्रानियों 2:17, 1 यूहन्ना 2:2 और 1 यूहन्ना 4 में पढ़ाया जाता है, शायद यह 17 या 20 है, यह अध्याय 4 में है। यीशु न केवल एक भयानक, यातनापूर्ण, शारीरिक मृत्यु की संभावना से पीछे हट गया, बल्कि वह पाप-वाहक बनने और आपके और मेरे जैसे लोगों को बचाने के लिए परमेश्वर के क्रोध का अनुभव करने की संभावना से भी पीछे हट गया।

गेथसेमेन के लिए प्रभु का धन्यवाद। नहीं, हमें उन जगहों के बारे में बताने की ज़रूरत नहीं है जहाँ यीशु की मानवता इतनी स्पष्ट है। बल्कि, हम इस बात पर आनन्दित हैं कि जिसने हमसे प्रेम किया वह न केवल स्वर्ग में परमेश्वर था बल्कि स्वर्ग में परमेश्वर जो पृथ्वी पर परमेश्वर बन गया और हमसे प्रेम किया और हमें हमारे पापों से बचाने के लिए खुद को हमारे लिए दे दिया।

पाप-क्षमता -दोष-शून्यता पर चर्चा करेंगे। यही हमारी योजना है, भगवान की इच्छा से।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन हैं जो क्राइस्टोलॉजी पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 18 है, सिस्टेमेटिक्स, क्राइस्ट प्रूफ़ की मानवता।